सद्गुरु तत्व बोध

SADGURU TATV BODH

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan" 5, Jasola Vihar,
(Behind Apollo Hospital)
New Delhi-110025
Ph: 26956561-62
Fax: 91-11-26955261
E-mail: saikalp@gmail.com
saikalp@yahoo.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay K.Varma
Jogesh Grover

Subscription

INLAND

Yearly	Rs.100.00
Life Time	Rs.500.00

OVERSEAS

Yearly	US$ 50.00
Life Time	US$200.00

Printed by
PNV CREATIONS
New Delhi-110008
Phone: 011-41544399

PUBLISHED EVERY MONTH

© All rights reserved with the Publisher

ॐ

''ॐ श्री साईनाथाय नमः''
''ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः''

नई दिल्ली — श्री साई शके : 27
अंक — सत्तासी — मई, 2009

शक्तिपीठ

इहजन्म में नर से नारायण बन जाना यही अंतिम ध्येय है ऐसा शास्त्र वचन है। उसी तरह ''मुखे नारायण उच्चार, दत्रात्रय माझा''—याने मुख से ''नारायण'' उच्चार रहने पर ''दत्र'' अवस्था प्राप्त होना है—ऐसा आशीर्वाद श्रीपंत महाराज ने शब्द ब्रह्म से दिया है यह जानकर वं. दादाजी ने तीन शक्तियों के संयोग से चौथी शक्ति निर्माण की अर्थात् उस ''नारायण अवस्था'' को प्रकृति रूप देकर उसे ''नारायणी'' बना दिया। शक्ति जब प्रकृति रूप बनती है तभी उसका लाभ सहजता से सभी को प्राप्त हो सकता है। आज हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि त्रिगुणात्मक शक्ति विश्व के उत्पत्ति काल से अस्तित्व में है मगर उनमें से चौथी शक्ति सद्गुरू दादाजी ने निर्माण की, उदय की। ''नारायणी'' यह दादाजी ने विश्व को दी हुई अनमोल देन है।

''विमोचन'' साधन यह दादाजी ने प्राप्त किया हुआ दुर्लभ साधन है। उन्होंने उसे साध्य करके सिद्ध

स्वरूप में सबकी तरफ प्रवाहित किया तथा जिन पाँच ऋणानुबंधों के कारण मानवी जीवन के विकास को विलंब लगता है उनका विमोचन करके हर विमोचन के साथ एक दीक्षा प्रदान की। मातृ-पितृ ऋणानुबंध के लिए वंश विमोचन और उपासना दीक्षा, जन्मकर्म ऋणानुबंध के लिए कर्म विमोचन और अनुग्रह दीक्षा तथा देवादिक ऋणानुबंध के लिए महाकारण प्रतिमा और गुरूदीक्षा इस प्रकार दी गयी। इन पाँच ऋणानुबंधों में से ऊपर बनाये गये चार ऋणानुबंध ये आज प्राप्त हुई देहिक अवस्था से हितसंबंधित हैं अगर पाँचवां जो ''जन्म-जन्मांतर'' ऋणानुबंध है उसका हितसंबंध आत्मा से तथा उससे लिये हुए पिछले अनेक जन्मों से तथा आगे लेने वाले अनेक जन्मों से है। ''किसी ने ने देखा, किसी ने न सुना'' ऐसा यह पाँचवें ऋणानुबंध का विमोचन सिद्ध करने के लिए दादाजी ने अपनी कुर्बानी देकर ''नारायणी'' प्रतिमा सिद्ध की। इस तरफ अगर हमने गौर किया तो दादाजी के मन की भव्यता, बुद्धि की व्यापकता तथा लोक कल्याण की आस कितनी थी इसका अंदाजा हम लगा सकते हैं।

आज सद्गुरू दादा हमें यह बता रहे हैं कि ''इस जन्म को सार्थक करने के लिए जो अनमोल समय आप जीवन में व्यर्थ गंवाने वाले थे या फिर उसे खर्च करना आवश्यक ही था उसकी प्राप्ति ''गुरूकृपा'' से आज आपको सहजता से हुई है। अब बचा हुआ यह समय अमूल्य निधि समझ कर औरों को देने के लिए व्यतीत करो, तभी ''गुरू अनुगृहित'' बनकर मानवी जीवन ईश्वरमय बने इसके लिए जो कर्तव्य आपका है उसका स्वीकार आपने किया है ऐसा हम सोच सकते हैं।''

अपने जीवन में ईश्वर कृपा से सद्गुरूनाथ दादा जैसे अलौकिक गुरू माध्यम का लाभ हमें प्राप्त हुआ। दुनिया में और कोई भी अकेला व्यक्ति हमें कभी दे न सकेगा ऐसा प्रपंच से परमार्थ और आध्यात्म तक का लाभ दादाजी ने हमें दिया है। इतना ही नहीं, बल्कि अपने जन्मजन्मांतर को अपने अगले जन्मों के लिए भी कृपाशीर्वाद की देन हमें दी है। इसके बारे में सजग होकर अगले कार्य में कर्तव्य का हिस्सा अगर हमने उठाया तो प्राप्त कृपा से उपकृत होने का समाधान हमें प्राप्त होगा। भवितव्य में श्रीसद्गुरू को दुनिया में जो भी कुछ योजना कार्यान्वित करनी है ऐसे कार्य का संकल्प इकत्रित होकर हम सबने चैत्रप्रतिपदा के दिन शक्तिपीठ के सामने लिया है।

यह संकल्प यशस्वी हो ऐसी इच्छा ईश्वर की है जिसके लिए शक्तिपीठ के सामने जिन शक्ति लहरों का लाभ उस दिन हमें हुआ उस धारणा को वृद्धिगत करना है। यह कार्य दैनंदिन साधना में प्रतिमा माध्यम से होगा। इसका अर्थ यह नहीं है

यह लाभ केवल जो गुरूबंधु भगिनी 1 अप्रैल को गोवा में शक्तिपीठ के सामने हाजिर थे उन्हें ही होगा बल्कि इसका लाभ सभी को ही मिलेगा। श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी ने यह कार्य ऐसा किया है कि इसका लाभ सभी को समान रूप में ही प्राप्त होगा। इतना ही नहीं बल्कि सिद्धता करते हुए उन्होंने इसकी पूर्व अवस्था का भी उसमें समावेश किया है। हर दीक्षा में उस दीक्षा की पूर्व दीक्षा भी धारण की गयी जिसकी वजह से भक्त भाविकों में जेष्ठ-कनिष्ठ, नये-पुराने ऐसा कोई भेदभाव नहीं रहा। काया-वाचा-मन एकरूप करके जो साधना करेगा उसे इस शक्ति का लाभ जल्दी मिलेगा और उसी तरह उसका देहिक विकास भी होगा। इसीलिए अपने आचार-विचार-उच्चारों में कौन-सा स्थित्यंतर हो रहा है इसका ज्ञान प्राप्त करके स्वयं ही अपने जीवन का सिंहावलोकन हर व्यक्ति को करना उचित रहेगा।

शक्ति की धारणा करना इसका अर्थ शरीर में कोई नया नहीं है बल्कि मन के माध्यम में उत्पन्न होने वाली प्रसन्नता की भावना यही "शक्ति" धारणा है। इसके लिए हर दिन अपने घर में आधा घंटा साधना के लिए व्यतीत करने का कर्तव्य हम सबको नियमित रूप से करने की कोशिश करनी चाहिए। तब ही मन के प्रसन्न रूप से ही हम अपनी साधना के जरिए शक्ति से कितने एकरूप हो जाते हैं इसका अंदाजा हम खुद ही लगा सकेंगे।

बहुतांश साधक ईश्वरी तत्व का अत: विश्व उत्पत्ति का जो कार्यकारण भाव है उसके अंतर्गत गहन शक्ति का शोध लेने में अपनी पूरी जिन्दगी व्यतीत करते हैं। श्रीसद्गुरूदादाजी ने ऐसा नहीं किया। गुरू तत्व का तथा विभूतियों की कृपा का लाभ उन्हें जब हुआ तब यहाँ अपने जीवन का अंतिम मकसद है ऐसा मानकर वे चुप बैठे नहीं बल्कि मानवी जीवन जन्मजन्मांतर से कैसे साकार होता है, यह जीवन साकार होने में कौन-सी बाधाएं खड़ी होती हैं तथा ये बाधाएं निवारण करने की कौन सी आसान निराकरण पद्धतियाँ हैं इसकी खोज उन्होंने की और ऐसी सिद्धता की कि दुनिया के किसी भी धर्म-पंथ की व्यक्ति अगर इसको आसानी से स्वीकार करें तथा कोई भी खर्चाऊ विधि किये बिना उसका लाभ उसे आसानी से मिले। प्रापंचिक जीवन में समस्याएँ निवारण करने से लेकर जीवन का सार्थक कर लेने तक की पूरी कार्य पद्धति दादाजी ने दुनिया के सामने रखी। आध्यातिमक क्षेत्र में श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी का यह अनोखापन इस तरह खिल उठता है।

"आध्यात्मिक मार्ग में "साधक" अवस्था धारण करके अंतिम ध्येय अर्थात् "सिद्ध" अवस्था प्राप्त करना" ऐसा अर्थ उसका अनुसरण करने वाले निकालते हैं।

ईश्वरी मार्ग का अनुसरण करना याने ईश्वरी तत्व से एकरूप होना, मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना इसी दिशा से बहुतांश साधक भरसक प्रयत्न करते रहते हैं। दादाजी ने सिद्धावस्था की अपना अंतिम ध्येय नहीं माना बल्कि——

साधक — सिद्ध — साध्य

इस सिद्धांत को अपने जीवन में साकार किया साधक अवस्था में साध्य याने ''सिद्ध अवस्था'' प्राप्त करना है फिर भी सिद्धावस्था के बाद ''साध्य'' तो होता ही है और वह है कि स्वयं मेहनत से प्राप्त की हुई सिद्धावस्था औरों में आसानी से साकार करना। आमतौर पर इंसान खुद को प्राप्त हुए ऐहिक सुखों का उपभोग अपने परिवार के साथ स्वयं लेता है। परिवार के अलावा अन्य व्यक्तियों को उस में शरीक होने की उदारता दिखाने वाले लोग बहुत ही कम हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी जो अवस्था व्यक्ति पा लेता है वह ''अपनी तपस्या से प्राप्त की है'' ऐसा देहभाव ही आगे वृद्धिंगत होता है। मगर खुद प्राप्त की हुई पुण्याई न ही केवल खुद के लिए है बल्कि औरों का भी उसमें समावेश किया जाना चाहिए यह विचार आने के लिए मन का विशाल होना आवश्यक है। श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी के मन की भव्यता शब्दों में बयान करने के परे है अत: उन्होंने स्वयं क्रमश: जिन अवस्थाओं का अनुभव किया उनमें उन्होंने सभी भक्तों को समा लिया।

एक बार उन्होंने कहा था, ''जगतात गुण्या गोविंदाने जमा, आणि गुण इचे ठेदून ''गोविंद''''गोविंद'' मृगन जमाया निरोण ध्या। ते गुण जमाया आदर्श होतीस।'' इसका अर्थ यह है कि ''तुम अपने गुणों के साथ जियो पर जब यह दुनिया छोड़ जाओगे तो अपने गुणों को यहीं छोड़कर और मुख से ''गोविंद'' ''गोविंद'' कह कर इस दुनिया से विदा ले लो। अर्थात् ऐसे गुणों के साथ जियो जो औरों के लिए अनुकरणीय होंगे।''

मनुष्य जन्म दुर्लभ है। ऐसे दुर्लभ जन्म में हमें ऐसे दुर्लभ सद्गुरू का लाभ हुआ है अब —

''वृद्धिंगत हे कार्य करा हो,
हृदयी अन् जगती।''

(अर्थ — इस कार्य को वृद्धिंगत करो — अपने हृदय में तथा दुनिया में)

परम पूज्य विभूतियों के वचनानुसार श्रीसाईं आध्यात्मिक समिति का सेवक बनकर आगे का रास्ता हम सब को दृढ़ता से निष्ठा से और निस्वार्थ मनोधारणा से तय करना है। तब फिर मानवता युग का जगमगाता तेज इस दुनिया को समाकर श्री जगद्गुरू महाराज, श्रीसद्गुरूनाथ दादा आदि विभूतियों की कृपा से निश्चित ही समूचे विश्व का आसमान आलोकित कर देगा।

''शुभ भवंतु''